नक्काशीदार केबिनेट (उपन्यास)

लेखिका : सुधा ओम ढींगरा

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सम्राट कॉम्प्लेक्स, बेसमेंट बस स्टैंड, सीहोर, म.प्र.; मूल्य : 150 रुपये

भारत-अमेरिका की सांस्कृतिक पहचान

बलराम प्रसाद

सूचना तकनीक ने भले ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी हो, संपूर्ण विश्व एक छोटे-से गांव में तब्दील हो गया हो, पर पुस्तकें आज भी विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम हैं। भारत से लेकर अमेरिका तक अब भी आम आदमी के विकास के लिए जरूरी शिक्षा, ज्ञान, सूचना और साक्षरता का एकमात्र साधन किताबें ही हैं। सुधा ओम ढींगरा का उपन्यास, 'नक्काशीदार केबिनेट' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, क्योंकि सुधा जी हैं तो भारतीय, परंतु विवाहोपरांत अमेरिका उनका कर्मक्षेत्र बना। उनके साहित्यिक कृतित्वों में भारतीय-अमेरिकी साहित्य, सांस्कृतिक, संस्कार, रहन-सहन एवं जीवनशैली आदि को बारीकी से देखा जा सकता है।

समय अदृश्य, अमूर्त होकर भी एक शाश्वत रूपक है, वह गति की निरंतरता भी है और अपना इतिहास भी, स्मृति भी। इस उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक सुधा जी की लेखन यात्रा निरंतर विकसित एवं विस्तृत होते देखी जा सकती है। वे पात्रों को अपनी मृदुल स्मृतियों से बांधे हुए रहती हैं। स्मृतियां मौन नहीं रहतीं। वे सतत संवाद करती रहती हैं। एक उदाहरण, ''भोगा हुआ कटु यथार्थ जब खरोंचें छोड़ जाता है; तो उनकी कितनी ही मरहम पट्टी की जाय, निशान फिर भी रह जाते हैं।''

संचार माध्यम बदलते हुए विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्र बनते जा रहे हैं। पिछले दो दशक में सूचना तंत्र अत्यधिक सशक्त हुआ है, उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं, लेकिन पुस्तक का महत्त्व इस विस्तार के बावजूद अक्षुण्ण है। कई अर्थों में सुधा जी का यह उपन्यास तमाम प्रगति के बावजूद भारत और अमेरिका के सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन बैठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लेखिका का भाषाई जादू इतना जबरदस्त है कि कोई पाठक जब प्रथम पृष्ठ पढ़ना शुरू करता है तो वह अंतिम पृष्ठ तक अपने आपको एक जादुई पाश में बंधा पाता है। वास्तव में 'नक्काशीदार केबिनेट' उपन्यास भारत और अमेरिका की सांस्कृतिक पहचान का बयान है। उपन्यास ज्ञानवर्धक, सरस भरपूर मनोरंजन के साथ भारतीय-अमेरिकी सांस्कृतिक का एक तरह से दस्तावेज जैसा है।